1 सुभाषितानि

(मधुर वचन)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस गीति पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक कुछ श्लोकों का एक चार्ट तैयार करें और छात्रों से पढ़वाएँ।
- सी.डी. के माध्यम से भी इस पाठ का वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्र से एक-एक श्लोक पढ़वाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

1. जिसने प्रथम अर्थात ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्या अर्जित नहीं की, द्वितीय अर्थात गृहस्थ आश्रम में धन अर्जित नहीं किया, तृतीय अर्थात वानप्रस्थ आश्रम में कीर्ति अर्जित नहीं की, वह चतुर्थ अर्थात संन्यास आश्रम में क्या करेगा?
2. अच्छे लोग वही बात बोलते हैं, जो बात उनके मन में होती है। अच्छे लोग जो बोलते हैं, वही करते हैं। ऐसे पुरुषों के मन, वचन और कर्म में समानता होती है।
3. न कोई किसी का मित्र होता है और न ही शत्रु। अपने-अपने स्वार्थवश मित्र तथा शत्रु आपस में जुड़ते हैं।
4. दुर्जन व्यक्ति को मित्र नहीं बनाओ और न ही उससे शत्रुता करनी चाहिए। एक जलता हुआ कोयला हाथ जलाता है और ठण्डा कोयला भी हाथ को काला करता है।
5. किसी व्यक्ति के बरबाद होने के छह लक्षण होते हैं– नींद, गुस्सा, भय, तन्द्रा, आलस्य और काम को टालने की आदत।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) अ (ग) अ (घ) ब (ङ) ब
2. (क) सख्यम्, कारयेत्
   उष्णः, कृष्णायते
   (ख) अर्जिता, द्वितीये, धनम्
   पुण्यम्, करिष्यति
3. (क) द्वितीये किम् अर्जयेत्?
   (ख) व्यवहारेण कः जायन्ते?
   (ग) सख्यं द्वेष केन समं न करणीयम्?
   (घ) उष्णः कः दहति?
   (ङ) पुरुषेण कति दोषाः हातव्याः?
4. (क) द्वेषम् (ख) शीतलः (ग) रिपुम्
   (घ) सज्जनः (ङ) गुणाः
5.

पदानिः	**मूलशब्द**	**वचनम्**	**लिङ्गम्**	**विभक्तिः**
सज्जनानाम्	सज्जन	बहुवचनम्	पुल्लिंग	षष्ठी
पुरुषेण	पुरुष	एकवचनम्	पुल्लिंग	तृतीया
मित्रम्	मित्र	एकवचनम्	नपुंसकलिंग	द्वितीया
क्रियायाम्	क्रिया	एकवचनम्	आकारान्त	सप्तमी
रिपवः	रिपु	बहुवचनम्	नपुंसकलिंग	प्रथमा

2 लृट लकारः
(भविष्यत् काल)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक लृट लकार का उदाहरण सहित चार्ट तैयार करें। छात्रों को इसके बारे में समझाएँ
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्र से एक-एक वाक्य सुनें।

- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकासित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- इससे छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

- जो काम आने वाले समय में होगा, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। इसके लिए संस्कृत में 'लृट् लकार' का प्रयोग होता है।

स्वतंत्रता दिवस

कल स्वतंत्रता दिवस है।
विद्यालय में छुट्टी होगी।
लोग लालकिले पर जाएँगे।
प्रधानमंत्री महोदय ध्वजारोहण करेंगे।
वे लोगों को देश की प्रगति के विषय में बताएँगे।
मैं भी मित्रों के साथ जाऊँगा।
तुम सब भी जाओगे।
उसके बाद हम सब घूमने के लिए जाएँगे

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) ब (ग) ब (घ) ब (ङ) अ
2. (क) तुम गाओगे (ख) वह लिखेगी (ग) वे दो खाएँगे
   (घ) वे सब जाते हैं (ङ) मैं देखूँगा (च) हम सब पढ़ेंगे
3. (क) सा (ख) त्वम् (ग) आवाम्
   (घ) यूयम् (ङ) युवाम् (च) युवाम्
   (छ) तौ (ज) अहम
4. (क) जना: भ्रमणाय गामिष्यन्ति।
   (ख) ते गीतं गास्यन्ति।
   (ग) छात्र: पाठं पठिष्यन्ति।
   (ङ) वयम् आपणं गमिष्याम:।

3 लङ् लकारः

(भूतकाल)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक चार्ट पेपर पर लङ् लकार की परिभाषा और उदाहरण संक्षिप्त रूप में लिखें। संस्कृत व्याकरण के बारे में भी बताएँ।
- सी.डी. द्वारा भी इस पाठ का वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के पश्चात छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

अब हम सब सस्वर पढ़ते हैं।
मेरी सखी घर आती है।
उसने मुझसे वार्तालाप किया।
हम दोनों बाज़ार गए।
तुम घर से कब आए?
तुम दोनों ने अपना पाठ पढ़ा।
तुम सबने लेख लिखा।

कल रविवार था। हम जन्तुशाला घूमने गए। वहाँ तालाब में हंस और बत्तखें तैर रही थी। सिंह पिंजरे में गरजता था। दो हिरण इधर-उधर दौड़ते थे। बच्चे वहाँ बंदरों को देखकर बहुत खुश हुए। क्या तुम सब भी वहाँ गए थे। तुमने वहाँ क्या देखा? शाम को हम घर आ गए और गृहकार्य किया। मैंने दूध पीया। उसके बाद सोने चला गया।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अकुर्वन् (ख) अपिबम् (ग) अस्मरतम् (घ) अगच्छाम (ङ) अवदः
2. (क) महिलाः (ख) सः (ग) वयम् (घ) बालकाः (ङ) अहम्

3. (क) अहं गृहं अगच्छम्।
(ख) वयं पुस्तकं अपठाम्।
(ग) ते भिक्षुकेभ्य: वस्त्राणि अयच्छन्।
(घ) स: जलं अपिबत्।

4. (क) तौ पुस्तके अपठताम्। (ख) वयं दुग्धम् अनयाम।
(ग) अहं असत्यं न अवदम् (घ) स: फलानि अखादत्।

5. (क) सूद: भोजनं अपचत्। (ख) कन्ये तरणताले अतरन्।
(ग) वयं भोजनं अखादाम। (घ) सैनिका: युद्धक्षेत्रम् अगच्छन्।
(ङ) बालक: अध्यापकम् अनमत्।

4

लोट् लकार:
(लोट् लकार)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक लोट् लकार की परिभाषा और उदाहरण चार्ट पेपर पर तैयार करें। छात्रों को काल के बारे में समझाएँ।
- सी.डी. द्वारा भी इस पाठ का वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा और छात्रों से बारी-बारी से संस्कृत में संवाद करवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

संवाद

सौरभ – आचार्या, नमस्कार।
आचार्या – दीर्घायु हो।
रचना-अर्चना – हम दोनों नमस्कार करते हैं।

आचार्या	–	चिरंजीव रहो।
पंकज	–	क्या मैं आ सकता हूँ?
आचार्या	–	आओ, और बैठो।
सभी छात्र	–	आज हम सब क्या पढ़ेंगे?
आचार्या	–	आज मैं सदाचार के नियम पढ़ाऊँगी। तुम सब ध्यान से सुनो। (*सब चुपचाप बैठकर सुनते हैं*)
आचार्या	–	जीवन में सदा अनुशासन का पालन करो। परिश्रम से सब काम करो। सदा सच बोलो। गरीबों की मदद करो। घमण्ड मत करो और गर्व मत करो, अभिमानी मत बनो। झूठ मत बोलो, व्यर्थ मत बोलो। कुमार्ग पर न चलो, अनर्थ मत करो। मादक पदार्थ मत पीओ। सब अपने कार्य समय पर करो।
सभी छात्र	–	हम सब इन नियमों का पालन करेंगे।
आचार्या	–	सभी जीवन में खुश रहो।
सभी छात्र	–	धन्यवाद।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) तौ (ख) वीराः (ग) आवाम् (घ) त्वम् (ङ) युवाम्
2. (क) करवाम (ख) स्मरत (ग) पठतम् (घ) यच्छ (ङ) गच्छन्तु
3. (क) कन्याः पठन्तु।
   (ख) धनिकौ निर्धनेभ्यः धनं यच्छाताम्
   (ग) छात्राः विद्यालयं गच्छन्तु।
   (घ) त्वम् नगरात् गच्छ।
4. (क) अनुभवः मित्रैः सह खेलतु
   (ख) त्वम् दुग्धं पिब।
   (ग) युवां तीव्रम् धावतम्।
   (घ) ताः कार्याणि कुर्वन्तु
   (ङ) यूयम् देशम् रक्षत।

5 विधिलिङ् लकारः

(विधिलिङ् लकार)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक विधिलिङ् लकार के बारे में छात्रों को चार्ट पर समझाएँ।
- सी.डी. द्वारा भी इस पाठ का वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे। छात्र लोट् और विधिलिङ् लकार में अंतर जान जाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। संवाद शैली के इस पाठ का छात्रों से वाचन करवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

सौम्या – आचार्य। विधिलिङ् लकार कब प्रयुक्त होता है?

आचार्य – सौम्या, यह लकार आज्ञा, प्रेरणा और निवेदन के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

रवि – क्या लोट् और विधिलिङ् लकारों का समान अर्थों में प्रयोग किया जाता है?

आचार्य – हाँ, लेकिन विधिलिङ् लकार के प्रयोग में अर्थ विशेष भी दिखता है।

सौम्या – आचार्य, आप उदाहरण से समझाइएँ।

आचार्य – देखो।

आज्ञा के अर्थ में – अशोक शीघ्र घर जाओ। कुएँ से जल लाओ।
तुम भी विद्यालय जाओ।
तुम सब शिक्षक को नमस्कार करो।
क्या मैं अंदर आ सकता हूँ।

कामना	–	देवेश वैज्ञानिक बने। तुम दोनों चिकित्सक बनो। हम सदाचारी बनें। तुम अनाथों की सेवा करो।
विनम्र निवेदन	–	यह विद्वान मेरे पुत्र को पढ़ाएँ। तुम मुझ पर कृपा करो। वे ही राष्ट्रगीत गाएँ।
सभी छात्र	–	अच्छा! धन्यवाद।
आचार्य	–	हम प्रार्थना करते हैं कि हम सभी सौ वर्षों तक जिएँ। सौ वर्षों तक बोलें और सौ वर्षों तक सुनें। हम सौ वर्षों तक दीनतारहित हों।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) ब (ग) ब (घ) अ
2. (क) भवेत् (ख) कुर्याः (ग) आगच्छेयम् (घ) स्याम
3.

धातुः	**पुरुषः**	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
गम्	प्रथम	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
पठ्	उत्तम	पठेः	पठेतम्	पठेम
प्रच्छ्	मध्यम	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
नी	प्रथम	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
कृ	मध्यम	कुर्याः	कुर्येतम्	कुर्येत

4. (क) अन्तः बहिः
   (ख) सदाचारिणः दुराचारिणः
   (ग) मूर्खः विद्वान्
   (घ) दीनाः अदीनाः
   (ङ) विलम्बः शीघ्रम्

6 प्रत्ययाः
(प्रत्यय)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक कृत प्रत्यय– क्त्वा, (ज्वा), तुमुन्

(तुम्) और ल्यप् (य) के बारे में चार्ट तैयार करें। छात्रों को प्रत्यय के बारे में समझाएँ।

- सी.डी. के माध्यम से कहानी का वाचन करवाएँ। तीन–चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार–चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- प्रत्येक छात्र से कहानी का कुछ अंश पढ़वाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

घण्टासुर

नीलगिरि पर्वत के पास एक विशाल देवालय था। एक बार कोई चोर देवालय का एकमात्र घण्टा चुराकर ले गया। अपनी रक्षा के लिए वह डरकर जंगल में चला गया और वहाँ सिंह ने उसे मार डाला। घण्टा वहीं पड़ा रहा। प्रात:काल एक बंदर ने उस घण्टे को उठाया और उसे बजाने लगा। अब सभी बंदर चकित और प्रसन्न होकर उस घण्टे को बारी–बारी से बजाने लगे।

पर्वत के समीप ही एक गाँव था। बार–बार शिखर से घण्टे की आवाज़ सुनकर ग्रामवासी सोचने लगे कि पर्वत प्रदेश में घण्टासुर नामक राक्षस रहता है। वह मनुष्य को खाकर घण्टा बजाता है। इस अफवाह से डरकर ग्रामवासियों ने दूसरी जगह जाना शुरू कर दिया। राजा ने चिन्तित होकर घोषणा की, कि जो घण्टासुर को मारने में समर्थ होगा, उसे विपुल धन दिया जाएगा। घोषणा सुनकर एक वृद्ध ने सोचा कि वहाँ राक्षस है भी या नहीं। उसने वन में जाकर देखा कि बंदर घण्टा बजाते हैं।

दूसरे दिन वह केले और चने लेकर वन में गया। फल देखकर बंदरों ने घण्टा छोड़ दिया और फल उठाने में मग्न हो गए। उस वृद्ध ने तुरंत घण्टा उठाया और राजसभा में पहुँचकर बोला– "हे राजा! मैंने घण्टासुर को मार दिया है। यह उसका घण्टा है।

सत्य ही कहा गया है कि जहाँ बुद्धि होती है, वहाँ युक्ति होती है। उस दिन के बाद से ही घण्टे की आवाज नहीं आई और सभी संतुष्ट होकर खुशी से रहने लगे। राजा ने वृद्ध को बहुत–सा धन दिया।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) ब (ग) ब (घ) अ (ङ) ब
2. (क) के: फलै: आकृष्टा: अभवन्?
   (ख) वृद्धा किम् नीत्वा वनम् अगच्छत्।
   (ग) चौर: केभ्य: भीत: आसीत्।
3. (क) विपुलम् पर्याप्तम्
   (ख) अरण्यम् वनम्
   (ग) मर्कट: वानर:
   (घ) नृपति: राजा
4. (क) रमा अध्यापकं नत्वा कक्षायाम् तिष्ठति।
   (ख) विद्यालयं गत्वा वयं तत्र पठाम:।
   (ग) चलचित्रं दृष्टवा यूयम् गृहं गमिष्यथ।
   (घ) बालिका भोजनं कृत्वा शयनाय गच्छति।
   (ङ) स: पुस्तकानि नीत्वा मह्यं यच्छति।
5. (iii) पीत्वा पी + क्त्वा
   आनेतुम् आ + नी + तुमुन्
   प्रदाय प्र + दा + ल्यप्
   कृत्वा कृ + क्त्वा
   आगत्य आ + गम् + ल्यप्
   गन्तुम् गम् + तुमुन्
   प्राप्य प्रा + आप् + ल्यप्

7 सर्वनाम-प्रयोग:

(सर्वनाम का प्रयोग)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक सर्वनाम के बारे में छात्रों को समझाएँ और एक चार्ट तैयार करें। उसमें सर्वनाम के उदाहरण लिखें।
- सी.डी. द्वारा भी इस पाठ का वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।

- कक्षा में छात्रों को चार–चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

चित्रकूट नगर में अभिषेक और अभिमन्यु नाम के दो मित्र रहते थे। उन दोनों में अभिषेक दुबला और अभिमन्यु मोटा था। दोनों में गहरी मित्रता थी। वे दोनों सदा एक साथ ही विद्यालय जाते, पढ़ते और खेलते थे।
एक बार वे दोनों 'कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान' घूमने गए। वहाँ एक नदी भी बहती है। वे दोनों वहाँ वृक्ष की छाया में बैठकर आराम करने लगे। अचानक दोनों ने एक भालू देखा। अभिषेक डरकर पेड़ पर चढ़ गया लेकिन मोटा होने के कारण अभिमन्यु ऐसा करने में असमर्थ था। अभिमन्यु भी बहुत डर गया था। उसने सुना था कि भालू मृत प्राणी को नहीं खाता है। अतः वह मृतवत् होकर जमीन पर लेट गया। भालू ने उसको सूंघा और मृत मानकर चला गया।
अभिषेक वृक्ष से उतरकर उसके समीप आया। उसने अभिमन्यु से पूछा, "मित्र! भालू ने तुम्हारे कान में क्या कहा? अभिमन्यु बोला– "उसने कहा कि जो विपत्ति में सहायता नहीं करता, उस पर तो कभी विश्वास ही न करो। सही कहा गया है कि मित्र की परीक्षा विपत्ति के समय ही होती है।

अभ्यास–उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) अ (ग) ब (घ) अ (ङ) अ
2. (क) तयोः मैत्री कीदृशी आसीत्।
   (ख) सः कस्मात् अवतीर्य समीपे आगच्छत्?
   (ग) केन कथितम्–''यः विपदि सहाय्यः, सः एव मित्रम्।
   (घ) तौ कस्य छायायाम् अतिष्ठताम्?
3. (क) आगतः निर्गतः
   (ख) अवतीर्य आरुह्य
   (ग) विश्वासः अविश्वासः
   (घ) अगच्छत् आगच्छत्
   (ङ) छायायाम् आतपे

4. (क) अपि (ख) कुत्र (ग) अन्यत्र (घ) अधः (ङ) तदा

5. (क) गत्वा = गम् धातु + क्त्वा प्रत्यय

(ख) आदाय = आ + दा धातु + ल्यप् प्रत्यय

(ग) गन्तुम = गम् धातु + तुमुन् प्रत्यय

(घ) आकर्ण्य = आ + कर्ण् धातु + ल्यप् प्रत्यय

(ङ) दृष्ट्वा = दृश् धातु + क्त्वा प्रत्यय

(च) ग्रहीतुम् = ग्रह् धातु + तुमुन् प्रत्यय

8 अव्ययपदानि

(अव्यय पद)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक अव्यय पदों का चार्ट तैयार करें और छात्रों को इसके बारे में समझाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- प्रत्येक समूह के छात्र से संस्कृत का एक-एक वाक्य सुनें।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचप शैली का विकास होगी

संस्कृत में कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनका प्रयोग प्रयोग विभिक्ति, वचन व लिंग में एक ही रूप में होता है, बदलता नहीं है, उन्हें अव्यय पद कहते है; जैसे- कुत्र (कहाँ), अत्र (अहाँ), तत्र (वहाँ), सदा (हमेशा), बहिः (बाहर) उच्चेः (जोर से) आदि।

❖ पाठ का सार

अरुण कहाँ जाता है? वह बाग में जाता है। कुछ बालक वहाँ खेलते हैं। वे शाम को खेलते हैं। यहाँ अर्पिता पढ़ती है। वहाँ लता भी पढ़ती है। यहाँ मुकेश का घर है। बालक घर से बाहर खेलते हैं। तुम सदा सच बोलते हो। ईश्वर सब जगह है। नदी नीचे बहती है। वृक्ष के ऊपर घोंसले हैं। सौरभ,

मुकेश और लता विद्यालय से आते हैं। राधा कब विद्यालय जाती है? वह सदा प्रात: विद्यालय जाती है। घोड़ा तेज दौड़ता है। हाथी धीरे चलता है। कल छुट्टी थी। आज अनुराधा ओर शुभ बातचीत करते हुए विद्याल जाते हैं। अनुराधा ज़ोर से हँसती है। कल हम सब चिड़ियाघर जाएँगे।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) जहाँ (ख) कब (ग) धीरे (घ) यहाँ (ङ) नीचे
   (च) कहाँ (छ) तेज़ (ज) भी (झ) ज़ोर से/ऊँचा
   (ञ) हमेशा (ट) वहाँ
2. (क) तुम कब गाओगे? (ख) वह यहाँ लिखेगा?
   (ग) वे दोनों आज खाएँगे। (घ) वे सब धीरे जाते हैं।
   (ङ) मैं कल नाटक देखूँगा। (च) हम सब ज़ोर से पढ़ेंगे
3. 1. तीव्रम् 2. सदा 3. यत्र 4. तत्र 5. नीचै 6. उपरि
4. (क) अरुण: उद्याने भ्रमति।
   (ख) अश्व: तीव्रम् धावति।
   (ग) वृक्षस्य उपरि नीडा: सन्ति।
   (घ) राधा सर्वदा प्रात: विद्यालयं गच्छति।
4. (क) स: उद्याने भ्रमति।
   (ख) अश्व: तीव्रम धावति।
   (ग) वृक्षस्य उपरि नीडा: सन्ति।
   (घ) सा सर्वदा प्रात: विद्यालयं गच्छति।

9 मम परिवार

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक छात्रों से चार्ट पर अपने परिवार के सदस्यों के नाम चित्र सहित चिपकारकर परिवार वृक्ष बनवाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. क माध्यम से भी वाचन करवाएँ।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।

- प्रत्येक समूह के छात्र से उसके परिवार के सदस्यों के नाम संस्कृत में बुलवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- इससे छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

मैं राजीव हूँ। यह मेरा घर है। घर के चारों ओर पौधे हैं। घर में चार कमरे हैं। यह दादा जी हैं। यह दादी जी हैं। दादी जी प्रातः मंदिर जाती हैं। उन दोनों का मुझ पर स्नेह हैं। यह मेरे पिता हैं। यह मेरी माता है। वे दोनों चिकित्सक हैं। पिता सर्जन हैं। माता गुहकार्य में भी निपुण हैं। यह मेरे चाचा हैं। वह कार्यालय में निरीक्षक है। वह मेरे साथ खेलते हैं। वह मुझे पढ़ाते हैं। यह मेरी बहन है। वह विद्यालय में पढ़ती है। वह मेरे साथ विद्यालय जाती हैं। आज मेरा जन्मदिवस है। मेरे पिता मुझे उपहार देते हैं। अब हम सब मंदिर जाएँगे। हम वहाँ गरीबों को भोजन देंगे। उसके बाद हम सब घर जाएँगें। घर में मित्र दावत करेंगे।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) वयम् किम् पश्यामः?
   (ख) तौ कौ स्तः?
   (ग) अद्य कस्य जन्मदिवसः अस्ति?
   (घ) कस्याः रुचिः क्रीडने अस्ति?
   (ङ) कः कार्यालये निरीक्षकः अस्ति?
2. (क) मित्राणि प्रीतिभोजं करिष्यन्ति?
   (ख) भगिनी विद्यालये पठति?
   (ग) पितामही प्रातः देवालयं गच्छति?
   (घ) पितृव्यः कार्यालये निरीक्षकः अस्ति।
   (ङ) पिता चिकित्सकः अस्ति?
3. (क) चत्वार (ख) प्रातः (ग) पादपाः (घ) पितृव्यः
   (ङ) विद्यालयं

10 ग्राम्यजीवनम् (संवाद:)

(गाँव का जीवन)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक ग्राम्य-जीवन की संस्कृति का एक चार्ट तैयार करें और बच्चों को देश के गाँवों के बारे में बताएँ।
- सी.डी. द्वारा भी इस पाठ का वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होती है और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

जय – अहा! आज हमारी परीक्षा समाप्त हो गई। कल से तो पन्द्रह दिनों का अवकाश होगा। तुम छुट्टियों में क्या करोगे?

उज्ज्वल – मैं तो मामा जी के घर जाऊँगा।

जय – वह किस नगर में रहते हैं?

उज्ज्वल – वह तो गाँव में रहते हैं। वह किसान हैं।

जय – मेरी भी गाँव देखने की इच्छा है लेकिन हमारा परिवार तो यहीं रहता है।

उज्ज्वल – तो मेरे साथ चलो। मैं रात को नौ बजे रेल से जाऊँगा।

जय – परंतु हम दोनों वहाँ क्या करेंगे?

उज्ज्वल – वहाँ तो हरे-भरे विशाल खेत हैं। हम दोनों वहाँ घूमेंगे। कुएँ के जल में स्नान करेंगे और उसका ठण्डा जल पीकर आनंद का अनुभव करेंगे।

जय – क्या वहाँ भी दर्शनीय स्थल हैं?

उज्ज्वल – हाँ, वहाँ एक विशाल सरोवर है। उस तालाब में कमल खिलते हैं। पशु जल पीते है। लोग स्नान करते हैं।

जय – क्या वहाँ बगीचा भी है?

उज्ज्वल – हाँ। वहाँ उपवन में आम, बेल, नारियल के पेड़ और फूलों के पौधे हैं। वहाँ कोयल कूँ-कूँ करती है और मोर नाचते हैं। हिरण भी चरते हैं।

जय – अच्छा! क्या वहाँ पिज़्ज़ा-बर्गर आदि खाने वाले पदार्थ मिलते हैं?

उज्ज्वल – नहीं। पिज़्ज़ा आदि तो नहीं मिलते हैं परंतु वहाँ विविध प्रकार व्यंजन, दूध, फल और गन्ने का रस मिलता है।

जय – क्या वहाँ मनोरंजन के साधन नहीं हैं?

उज्ज्वल – वहाँ तो बच्चे और बड़े दो मुरगों की लड़ाई देखकर ही मनोरंजन करते हैं।

जय – अहा। गाँव का जीवन तो अद्‌भुत और रुचिकर है। वहाँ शुद्ध जलवायु भी है। मैं तो वहाँ जाने के लिए बहुत उत्सुक हूँ।

उज्ज्वल – ठीक है। तो हम दोनों चलते हैं और वहीं छुट्टियों का सदुपयोग करेंगे।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) ब (ग) अ (घ) अ (ङ) अ
2. (क) करिष्यति (ख) अनुभविष्यामि (ग) भवन्ति
   (घ) गच्छत (ङ) वर्धयेत्
3. (क) अहं दुग्धं पास्यामि।
   (ख) त्वम् उच्चैः हसिष्यसि।
   (ग) बालकाः भ्रमणाय उपवनं गमिष्यन्ति।
   (घ) बालिका चित्रम् द्रक्ष्यति।
4. (क) उपवने के: सन्ति?
   (ख) कदा अवकाशः भविष्यति?
   (ग) जनाः कूपस्य जलं पीत्वा कीदृशं अनुभवन्ति?
   (घ) तडागे कानि विकसन्ति?
   (ङ) मातुलः कुत्र वसति?
5. (क) त्वम् मया सह चल।
   (ख) खगाः वृक्षस्य उपरि तिष्ठन्ति।
   (ग) मम मातुलः ग्रामे वसति।
   (घ) युवाम् किम् खादिष्यथः?
   (ङ) वयं भ्रमणाय गमिष्यामः।

11 अतिलोभो न कर्तव्यः

(अधिक लालच नहीं करना चाहिए)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक छात्रों को पाठ से संबंधित कोई कहानी संक्षिप्त में सुनाएँ।
- सी.डी. के माध्यम से भी इस पाठ का वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

किसी देश में मायादास नाम का एक राजा था। वह बहुत लालची था। इसलिए उसके राज्य में गरीबी थी।

एक बार उसके महल में कोई साधु आया। राजा के सत्कार से खुश होकर उसने कहा, "राजा, इच्छित वर माँग लो।" लोभ में आकर उसने कहा– "मैं जिस भी वस्तु को हाथ लगाऊँ, वह सोना बन जाए।" वैसा ही हो, ऐसा कहकर साधु चला गया। उसके बाद राजा ने घर की वस्तुओं को छुआ, वे जल्दी ही सोना हो गई। मायादास बहुत खुश हुआ। प्यास के कारण उसकी पानी पीने की इच्छा हुई। परंतु जब उसने जल को हाथ से छुआ, तब पानी भी सोने का पिण्ड बन गया।

तभी उसकी पुत्री फूल लेकर वहाँ आई। राजा ने फूलों को छुआ, वे भी सोना बन गए। दुखी होकर मायादास ने पुत्री को गोद में बैठाया, परंतु वह भी सोना बन गई। मायादास बहुत दुखी हुआ और ज़ोर से रोने लगा।

उसी समय साधु राजा के सामने आया। मायादास ने उससे निवेदन किया– "महर्षि, कृपया दिया गया वरदान वापस लीजिए।" साधु ने कहा, "चिंता मत करो"। उद्धान से जल लाओ। उस जल को सभी वस्तुओं पर छिड़क

दो, वे अपनी पूर्वास्था में आ जाएँगी। भयभीत मायादास ने तभी वैसा ही किया। सभी वस्तुएँ अपने पुराने रूप में आ गई। उसकी पुत्री भी अपना रूप प्राप्त कर पिता के सामने आ गई।

तब मायादास ने लोभ त्यागकर जीवन-यापन के लिए कर्म करने की प्रतिज्ञा की। सत्य ही कहा गया है– "अधिक लालच नहीं करना चाहिए।"

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) अ (ग) अ (घ) अ
2. (क) नृपेण स्पृशं वस्तूनि सौवर्णानि जातानि।
   (ख) तस्य पुत्री प्रासादाम् आगता।
   (ग) जलम् अपि स्वर्णपिंडम् अभवत्
   (घ) पुत्री पुष्पाणि आदाय आगच्छति।
   (ङ) मुनिः तथास्तु उक्त्वा अगच्छत।
3. (क) मायादासः कीदृशः नृपः आसीत्।
   (ख) राजा केन मुनिम् अतोषयत्?
   (ग) भूपतेः नाम कः आसीत्?
   (घ) मायादासेन स्पृष्टानि वस्तूनि कीदृशानि जातानि?
4.

पदानि	**मूलधातुः**	**वचनम्**	**पुरुषः**	**लकारः**
आनय	आ+नी	एकवचनम्	मध्यम	लोट्
अभवत्	भू	एकवचनम्	प्रथम	लङ्
अभवन्	भू	बहुवचनम्	प्रथम	लङ्
इच्छति	इष्	एकवचनम्	प्रथम	लट्
कुरु	कृ	एकवचनम्	मध्यम	लोट्

5. (क) पिता पुत्राय फलं ददाति।
   (ख) आवाम् मुनिं नमावः।
   (ग) त्वम् प्रश्नं पृच्छ।
   (घ) सः उद्यानात् पुष्पाणि अनयत्।

12

चंद्रशेखरः आजादः

(चंद्रशेखर आजाद)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक स्वतंत्रता सेनानियों का चित्र सहित एक चार्ट तैयार करें और छात्रों को उनके बारे में बताएँ।
- सी.डी. के माध्यम से भी इस पाठ का वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

भारत के स्वतंत्रता संग्राम की कथा को कौन नहीं जानता है? महात्मा गांधी, लक्ष्मीबाई, भगतसिंह, सुभाष चंद्र बोस आदि वीरों ने अपना जीवन देश को अर्पित कर दिया। स्वतंत्रता आंदोलन एक ओर तो अहिंसा के अनुयायियों का था और दूसरी ओर क्रांतिकारियों का था। ये देश के लिए जीवन अर्पित कर अमर हो गए। ऐसा ही एक क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद भी था।

चन्द्रशेखर का जन्म भावरा गाँव में (अलीराजपुर) मध्यप्रदेश में हुआ। वह बचपन से ही प्रखर बुद्धि के थे। वह संस्कृत पढ़ने के लिए काशी गए। वह वहाँ देशप्रेम की भावना से प्रेरित हुए। अध्ययन काल में ही वह स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। बंदी बनाए जाने पर भी उन्होंने 'इन्कलाब जिंदाबाद' का उद्घोष बार-बार किया। अंग्रेज अधिकारी ने गुस्से में उन्हें प्रताड़ना दी, परंतु उन्होंने उद्घोष करना नहीं छोड़ा। न्यायालय के न्यायाधीश ने पूछा– "तुम्हारा क्या नाम है?" उन्होंने उत्तर दिया– 'आजाद' इसके बाद वह 'आजाद' के नाम से ही प्रसिद्ध हुए।

आजाद ने क्रांतिकारी संस्था बनाई। भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल और राजगुरु उसके सहयोगी थे। उन्होंने अंग्रेजी सरकार को जगाने के लिए संसद-भवन में बम फेंका। भगतसिंह और सुखदेव को बंदी बनाकर कारागार

ले जाया गया, परंतु आजाद अंग्रेजों के हाथ नहीं आया। अंग्रेजों ने उसको पकड़ने के लिए बहुत प्रयत्न किए। एक बार जब वह इलाहाबाद नगर के अलफ्रैड उद्यान में अपने मित्र के साथ मंत्रणा कर रहे थे। एक सहयोगी ने विश्वासघात कर अंग्रेज सैनिकों को वहाँ बुला लिया। उसका मित्र तो विवश होकर भाग गया, परंतु उसने अंग्रेज सैनिकों के साथ युद्ध किया। जब उसके पास एक ही गोली रह गई तब उसने घोषणा की– "अंग्रेजों के पास ऐसी गोली नहीं है जो आजाद को मार डाले।" ऐसा कहकर उसने उसी गोली से अपना जीवन समाप्त कर दिया।

हम सब सदा उनका नाम आदर और गौरव के साथ स्मरण करते हैं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) ब (ग) अ (घ) अ (ङ) ब
2. (क) समाप्तम् (ख) बाल्यकाले (ग) प्रखरबुद्धिः (घ) आजादः
3. (क) अहं आदरेण तं स्मरामि।
   (ख) ते मित्रैः सह मन्त्रणाम् अकुर्वन्।
   (ग) ते देशसेवायै प्राणान् अत्यजन्।
   (घ) आङ्ग्लसैनिकः तम् अताडयत्।
4. (क) बन्दीभूतः चन्द्रशेखरः किम् उदघोषयत्?
   (ख) ते जनान् जागरितुम कुत्र बमविस्फोटम् अकुर्वन्?
   (ग) तस्य पार्श्वे कति पिटकम् अवशिष्टम् आसीत्?
   (घ) सः बाल्यकालात् कीदृशः आसीत्?
   (ङ) आजादः किम् वर्षेणि एव आन्दोलने अकर्दूत्?
5. 1. बालकाः उद्याने भ्रमन्ति।
   2. खगाः वृक्षेषु तिष्ठन्ति।
   3. प्रातःकालः रविः उदयति।
   4. बालकाः खेलन्तिः

13

विद्या-महिमा

(विद्या की महिमा)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस गीति पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक कुछेक अन्य श्लोकों का भी चार्ट तैयार करें और छात्रों को उनके बारे में बताएँ।
- सी.डी. के माध्यम से भी इस पाठ का वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

1. विद्या हमें विनम्रता प्रदान करती है, विनम्रता से योग्यता आती है व योग्यता से हमें धन प्राप्त होता है और इस धन से हम धर्म के कार्य करते हैं और सुखी रहते हैं।
2. इसे न कोई चोर चुरा सकता है, न ही राजा छीन सकता है, न ही इसको संभालना मुश्किल है और न ही इसका भाइयों में बँटवारा होता है। यह खर्च करने से बढ़ने वाला धन है, विद्याधन सभी धनों से श्रेष्ठ है।
3. एक राजा और विद्वान में कभी कोई तुलना नहीं की जा सकती, क्योंकि एक राजा तो केवल अपने राज्य में सम्मान पाता है, वही एक विद्वान हर जगह सम्मान पाता है।
4. जो माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाते नहीं है, ऐसे माँ-बाप बच्चों के शत्रु के समान हैं। विद्वानों के बीच अनपढ़ व्यक्ति कभी सम्मान नहीं पा सकता, वह वहाँ हंसों के बीच एक बगुले की तरह होता है।
5. अच्छे कुल में जन्मा हुआ व्यक्ति अगर ज्ञानी न हो तो (उसके अच्छे कुल का) क्या लाभ। ज्ञानी व्यक्ति अगर कुलीन न भी हो, तो देवता भी उसकी पूजा करते हैं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) ब
   (ग) अ (घ) ब
2. (क) ददाति, पात्रताम्
   पात्रत्वाद, धनाद्
   (ख) नृपत्वं, तुल्यं
   स्वदेशे, राजा, पूज्यते
3. (क) विद्वान कुत्र पूज्यते?
   (ख) कस्मात् पात्रताम् याति?
   (ग) हंसमध्ये कः न शोभते?
   (घ) व्यये कृते केन/कया वर्तते/वर्धते एव?
   (ङ) कौ नैव तुल्यं कदाचन?
4. (क) नहि (ख) नहि
   (ग) आम् (घ) नहि
   (ङ) आम् (च) आम्

14 उष्ट्रस्य मूल्यम्
(ऊँट का मूल्य)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के माध्यम से छात्रों को क्रय-विक्रय के बारे में प्रेरणा मिलती है। शिक्षक छात्रों को अन्य उदाहरणों से भी समझाएँ।
- सी.डी. के माध्यम से भी इस पाठ का वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- प्रत्येक समूह का आपस में संवाद कराया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

- राजस्थान प्रदेश में ऊँट बहुत महत्वपूर्ण है। यहाँ के लोग इसे मरुस्थल का जहाज़ कहते हैं।

  (*बाज़ार में एक ऊँट विक्रेता ऊँट बेचने के लिए उत्सुक है।*)

  ले लो, ले लो। यह ऊँट सौ रुपये में मिल रहा है।

  (*पिता और पुत्र बाज़ार के बीच पैदल ही जा रहे थे।*)

पुत्र – पिता जी! यह तो कम मूल्य में मिलता है, इसे ले लो।

पिता – यह तो अधिक मूल्य है। मैं खरीद नहीं सकता हूँ।
(*पिता का उत्तर सुनकर बालक निराश हो गया, दो मास के बाद वे दोनों फिर बाज़ार आते हैं।*)

पिता – आज तो कम मूल्य में ऊँट मिलता है।

विक्रेता – ले लो, ले लो। यह ऊँट एक हज़ार रुपये में मिलता है।

पिता – पुत्र! इसको ले लो।

पुत्र – आप, सौ रुपये को अधिक और एक हज़ार रुपए को कम मूल्य कहते हैं।

पिता – उस दिन मेरे पास केवल पचास रुपये ही थे। आज मेरे पास दस हज़ार रुपये हैं। इसलिए यह कम मूल्य का है।

पुत्र – अब मैं जान गया हूँ कि वस्तु का मूल्य निर्धारण उसकी क्रय शक्ति ही होती है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) ब (ग) अ (घ) अ (ङ) ब
2. (क) तम् (ख) तस्मै (ग) तम् (घ) तेषु (ङ) तेभ्यः
3.

पदानि	**मूलधातुः**	**वचनम्**	**पुरुषः**	**लकारः**
शक्नोमि	शक्	एकवचनम्	उत्तम	लट्
कथयन्ति	कथ्	बहुवचनम्	प्रथम	लट्
भविष्यामः	भव्	बहुवचनम्	उत्तम	लट्
आगच्छ	आ + गम्	एकवचनम्	मध्यम	लोट्
खेलन्तु	खेल्	बहुवचनम्	प्रथम	लोट्

4. (क) जनाः नूतनानि वस्त्राणि धार्यन्ति।
   (ख) बालिका क्रीडनकानि क्रेतुम् इच्छति।
   (ग) माता पुत्रेण सह आपणस्य प्रति गच्छति।
   (घ) बालकः व्योभयानं क्रयति। (ङ) सः अजां नयति।

15

कः विश्वसनीय (क)

(कौन विश्वास के योग्य है)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के माध्यम से छात्रों को उचित-अनुचित के बारे में प्रेरणा मिलती है। इसके अतिरिक्त शिक्षक अन्य कहानियों के माध्यम से भी छात्रों को समझाएँ।
- सी.डी. के माध्यम से भी इस पाठ का वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- प्रत्येक समूह को पाठ का अलग-अलग अंश दिया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

उज्जयिनी नगर में एक गरीब ब्राह्मण रहता था। उसके परिवार में वह, उसकी पत्नी और बच्चे थे। एक बार उसकी पत्नी क्रोध से बोली– "बच्चे भूखे हैं। जाओ, भोजन लाओ।" उसने गाँव से बाहर निकलकर वन में प्रवेश किया। परंतु कुछ भी न मिला। प्यास से इधर-उधर घूमते हुए उसे एक कुआँ दिखाई दिया।

उस कुएँ में उसने बाघ, सर्प, वानर और मनुष्य को गिरे हुए देखा। ब्राह्मण को देखकर व्याघ्र ने प्रार्थना की– "हे देव, आप मुझे बाहर निकालिए।" ब्राह्मण बोला– "तुम बाहर आकर मुझे खा जाओगे।" उसने कहा– "वचन देता हूँ। तुम्हें हानि नहीं पहुँचाऊँगा।" ब्राह्मण ने विश्वास कर उसे कुएँ से बाहर निकाला। बाघ बोला– "देव! मैं पर्वत की गुफा में रहता हूँ। वहाँ आना, मैं तुम्हारे उपकार का बदला चुकाना चाहता हूँ।" ब्राह्मण ने कहा, आऊँगा। इसके बाद बंदर ने भी प्रार्थना की। बंदर ने बाहर आकर उसे दूर स्थित एक वृक्ष दिखाकर कहा– "किसी भी काम के लिए वहाँ आ जाना। ऐसा कहकर वह कूदता हुआ चला गया।"

सर्प ने भी उससे प्रार्थना की, परंतु ब्राह्मण डर गया था। सर्प ने कहा– "बिना कारण के साँप नहीं डसता है। अतः निश्िंचत होकर मुझे निकालिए।" ब्राह्मण ने वैसा ही किया। उसको प्रणाम कर सर्प बोला– "विपत्ति में मुझे याद करना। मैं भी ऋण से मुक्त होना चाहता हूँ।" ऐसा कहकर वह चला गया।

अब उस व्यक्ति ने भी ब्राह्मण से निवेदन किया– "हे ब्राह्मण देवता! मुझे बाहर भी निकालिए मैं तो तुम्हारे बंधु के समान हूँ।" दयालु ब्राह्मण ने उसकी भी सहायता की। वह व्यक्ति स्वर्णकार था। उसने भी ब्राह्मण से कहा– "यदि मेरी सहायता की आवश्यकता हो, आ जाना।" वह भी प्रणाम कर चला गया।

उसके बाद ब्राह्मण ने सोचा– "न जाने मैंने सही किया है या नहीं।" कुछ फल इकट्ठे करके वह घर की ओर चला गया।

अभ्यास–उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) ब (ग) अ (घ) अ (ङ) ब
2. (क) पुत्रः – सुतः (ख) जलम् – सलिलम् (ग) भुजंगः – सर्पः (घ) वानरः – कपिः (ङ) पत्नी – भार्या
3. (क) कूपस्य (ख) बुभुक्षिताः (ग) पर्वतस्य गुहायाम् (घ) माम् (ङ) चत्वारः
4. (क) सः ग्रामात् बहिः गत्वा कुत्र प्राविशत्?
   (ख) तं दृष्ट्वा केन प्रार्थना कृता?
   (ग) वानरः किम् दर्शयित्वा अवदत्?
   (घ) अहम् अपि कस्मात् मुक्तं भवितुम् इच्छामि?
5.

क्रियापदानि	**मूलधातुः**	**वचनम्**	**पुरुष**	**लकारः**
अलभज्	लभ्	एकवचनम्	प्रथम	लङ्
इच्छेत्	इष्	एकवचनम्	प्रथम	विधिलिंङ्
ददामि	दा	एकवचनम्	उत्तम	लट्
कर्षतु	कर्ष्	एकवचनम्	प्रथम	लोट्

16 कः विश्वसनीय (ख)

(कौन विश्वास के योग्य है)

❖ पाठ का सार

दूसरे दिन ब्राह्मण फिर भोजन की तलाश में आया लेकिन दुर्भाग्य से उसे कुछ भी नहीं मिला। तभी उसे बंदर का कथन याद आया और वह उसके पास गया। बंदर उसे देखकर बहुत खुश हुआ। उसने उसको मीठे फल दिए। ब्राह्मण ने सोचा– "बाघ की भी परीक्षा कर ली जाए।" अतः उसने पर्वत की गुफा में प्रवेश किया। बाघ उसे देखकर बहुत खुश हुआ और उसको सोने को आभूषण दिए। ब्राह्मण आभूषण बेचने के लिए सुनार के पास गया। वह सुनार आभूषण देखकर चकित हुआ और सोचने लगा– "ये तो राजपुत्र का है।" उसने ब्राह्मण को वहाँ बैठने को कहकर राजसभा में जाकर उस आभूषण को दिखाया। राजा ने पूछा– "ये तो मेरे मृत पुत्र के है, तुम्हारे पास कैसे आए?" सुनार ने उत्तर दिया– "एक ब्राह्मण मेरे पास इसे बेचने के लिए लाया है। मेरा मानना है कि वही राजकुमार का हत्यारा है।" राजा ने ब्राह्मण को जेल में डाल दिया।

उस ब्राह्मण ने दुखी होकर सर्प को याद किया। एक क्षण में सर्प वहाँ आ गया। ब्राह्मण की बात सुनकर उसने उपाय निकाला और बोला– "मैं, महल में रानी को डसूँगा। वैद्य उसके उपचार में सफल न होगा। केवल तुम्हारे छूने से ही वह विषमुक्त होगी। सर्प ने महल में प्रवेश कर रानी को काटा। वैद्य उसके उपचार में असफल हुआ। ब्राह्मण ने अधिकारी से निवेदन किया– "मैं उसका उपचार करने में समर्थ हूँ।" अधिकारी उसको राजा के पास ले गया। राजा की आज्ञा से ब्राह्मण ने रानी को छुआ और वह विषमुक्त हो गई। राजा बहुत प्रसन्न हुआ।

राजसभा में राजा ने ब्राह्मण का सत्कार किया। ब्राह्मण ने उसे सर्प, वानर, और बाघ के अनुभव के विषय में सब कुछ सच बताया। राजा ने ब्राह्मण को बहुत–सा धन देकर घर भेज दिया। और झूठे सुनार को जेल में डाल दिया।

अभ्यास–उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) ब (ग) अ (घ) ब (ङ) ब

2. (क) धनम् (ख) प्रसन्नः (ग) स्पर्शेन (घ) सर्पम् (ङ) विक्रेतुम्

3.

पदानि	**मूलशब्दाः**	**लिङ्गम्**	**वचनम्**	**विभक्तिः**
स्पर्शेन	स्पर्श	नपुंसकलिंग	एकवचनम्	तृतीया
वानरस्य	वानर	पुल्लिंग	एकवचनम्	षष्ठी
राज्ञीम्	राज्ञी	स्त्रीलिंग	एकवचनम्	द्वितीया
गुहायाम्	गुहा	स्त्रीलिंग	एकवचनम्	सप्तमी

4. (ख) कस्य स्पर्शेन सा विषमुक्ता स्यात्?
   (ग) सः ब्राह्मणाय किम् अयच्छत्?
   (घ) ब्राह्मणः दुखी भूत्वा कस्य अस्मरत्?

5. (क) शुकाः वृक्षे तिष्ठन्ति।
   (ख) बालकाः बालिकाः च जन्तुशालां गच्छन्ति।
   (ग) सिंहः पञ्जरे आसीत्।
   (घ) जनाः मृगाः अपश्यन्।
   (ङ) वानराः कूर्दन्ति।

17

संख्यावाचिनः शब्दाः

(संख्यावाचक शब्द)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापक से पूर्व शिक्षक संस्कृत में लिखि (1 से 20 तक) गिनतियों का चार्ट तैयार करें।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ।
- कक्षा में छात्रों से चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्र से संस्कृत में गिनतियाँ सुनी जाएं।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

1. एक – चाँद एक है।

2. दो – दो शेर दौड़ते हैं।
3. तीन – तीन चूहे है।
4. चार – चार बालिका हैं।
5. पाँच – हाथ में पाँच अंगुलियाँ हैं।
6. छह – मेरे परिवार में छह सदस्य हैं।
7. सात – ऋषि सात हैं।
8. आठ – मकड़ी के आठ पैर होते हैं।
9. नौ – ग्रह नौ हैं।
10. दस – रावण के दस मुँह थे।
11. ग्यारह – क्रिकेट की टीम में ग्यारह सदस्य होते हैं।
12. बारह – वर्ष में बारह महीने होते हैं।
13. तेरह – तेरह फूल हैं।
14. चौदह – ये सब चौहद फल हैं।
15. पन्द्रह – एक पखवाड़े में पन्द्रह दिन होते हैं।
16. सोलह – आठ और आठ सोलह होते हैं।
17. सत्रह – मेरे पास सत्रह रुपए हैं।
18. अठारा – पुराण अठारह होते हैं।
19. उन्नीस – यहाँ उन्नीस चम्मचें हैं।
20. बीस – वहाँ बीस बिजली के बल्ब हैं हैं।

अभ्यास–उत्तरमाला

1. (क) 4–चतुर् (ख) 8–अष्ट
   (ग) 3–त्रि (घ) 13–त्रयोदश
   (ङ) 16–पोडश (च) 19–नवदश्
   (छ) 11–एकादश (छ) 11–एकादश
   (ज) 17–सप्तहदश (झ) 5–पञ्च
   (ञ) 9–नव
2. पञ्च, सप्त, एकादश, अष्ट, अष्टादश, चत्वार:, त्रय:, दश, अष्ट त्रयोदश द्वौवि, पञ्चदश, चतुर्दश, सप्तदश, एक:,नव

18 पत्रलेखनम्

(रचनात्मकं कार्यम्)

अभ्यास-उत्तरमाला

1. 1. सप्ताहे 2. विद्यालयस्य 3. अभवत् 4. शिक्षानिदेशकः
5. कार्यक्रमाः 6. प्रतिवेदनम् 7. पुरस्कारवितरणम् 8. पुरस्कारम्
9. प्राप्तवान् 10. भवदीया

2. 1. गतसप्ताहात् 2. बहुकष्टम् 3. कृपया 4. दूरभाषस्य 5. दूरीकृत्य
6. प्रतिवेदनम् 7. मम 8. अस्ति 9. धन्यवादः 10. हेमन्तः

अभ्यास-पत्रम् उत्तरमाला

भाग (अ)

एकपदेनउत्तरत।

1. (क) ब (ख) ब

पूर्ण वाक्येन उत्तरत्।

वृक्षाः पुष्पाणाम्, फलानाम्, औषधीनाम् च आगाराः सन्ति।

भाषिक कार्यम्।

(क) पर्यावरणाय (ख) ल्यप् प्रत्यय

भाग ब

2. (क) सः उच्चैः गीतं अगायत्।
(ख) छात्राः लेखान् लेखिष्यन्ति।
(ग) वयम् चलचित्रं अपश्याम।
(घ) श्यामः पुस्तकानि नेष्यति।

3. (क) आदाय – आ + दा धातु + ल्यप् प्रत्यय
(ख) गन्तुम् – गम् धातु + तुमुन् प्रत्यय
(ग) दृष्ट्वा – दृश् धातु + क्त्वा प्रत्यय
(घ) ग्रहीतुम्– ग्रह् धातु + तुमुन् प्रत्यय
(ङ) घ्रात्वा – घ्रा धातु + क्त्वा प्रत्यय

4.

	मूलशब्दः	विभक्तिः	वचनम्
(क) साधूनाम्	साधू	षष्ठी	बहुवचनम्

(ख) अरण्ये	अरण्य	प्रथमा	द्विवचनम्
(ग) मित्रै	मित्रम्	तृतीया	बहुवचनम्
(घ) देशाय	देश	चतुर्थी	एकवचनम्
(ङ) दुर्जनन्	दुर्जन	तृतीया	एकवचनम्

5. (क) तस्मै (ख) तम् (ग) तेषु (घ) तेभ्यः (ङ) तेन

भाग (स)

6. एकपदेन उत्तर।

(क) ब (ख) ब

पूर्णवाक्येन उत्तरत

(क) बाह्मणं दृष्ट्वा व्याध्रेण प्रार्थना कृता।

(ख) व्याघ्रस्य गृह पर्वतस्य गुहायाम् आसीता।

भाषिक-कार्यम्

(क) उत्तमपुरुषः, एकवचनम्?

(ख) मंदः, सुगंधितः तव।

7. (क) वानरः तस्मै कानि अयच्छत्?

(ख) विद्वान कुत्र पूज्यते?

(ग) सः बाल्यकालात् कीदृशः आसीत्?

(घ) तौ कस्य छायायाम् अतिष्ठताम्?

(ङ) चौरः केभ्यः भीतः आसीत्?

8. (क) अरण्यम् वनम्

(ख) नृपतिः राजा

(ग) मर्कटः कपिः

(घ) सिंहः शार्दूलः

(ङ) जनाः व्यक्तयः

9. ददाति, पात्रताम्

पात्रत्वाद, धनात्